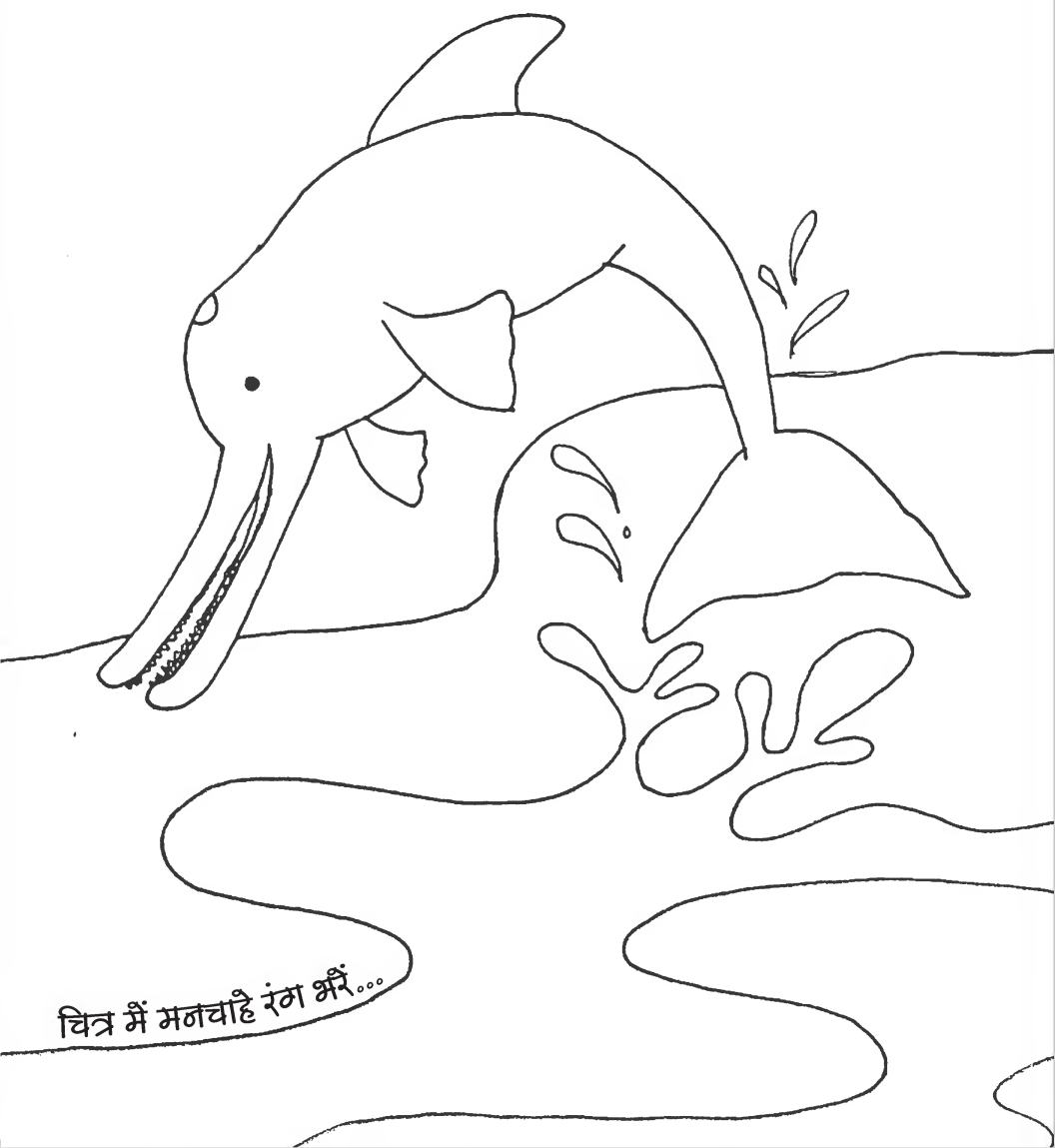


# मेरी कहानी गंगा डॉल्फिन

— सोनल नाईक —



चित्र में मनचाहे रंग भरें...

‘मेरी कहानी’ श्रृंखला के अंतर्गत बच्चों का वन्य जीवों से परिचय कराया जाएगा.

© मेरी कहानी: गंगा डॉल्फिन

2016

लेखन व चित्र :

सोनल नाईक

विशेष आभार :

आशुतोष भाकुनी

---

इस पुस्तक का निर्माण प्रथम संस्था की साइंस टीम के सहयोग से हुआ है. बच्चों के साथ बच्चे बनकर काम करने का तजुर्बा अनेक नई कल्पनाओं, जैसे कि यह पुस्तक को जन्म देता है. हमें खुशी है कि हमने मिलकर इस किताब का काम पूरा किया.

---

ISBN : 81-8434-026-5

प्रकाशक :

ट्री इम्प्रिंट्स

और

अच्चा बच्चा कम्युनिकेशन, मुंबई

संपर्क :

ऐ-5, हरि मुकुंद को. ऑप. हौ. सोसायटी,

सुयोग मंगल कार्यालय के नजदीक,

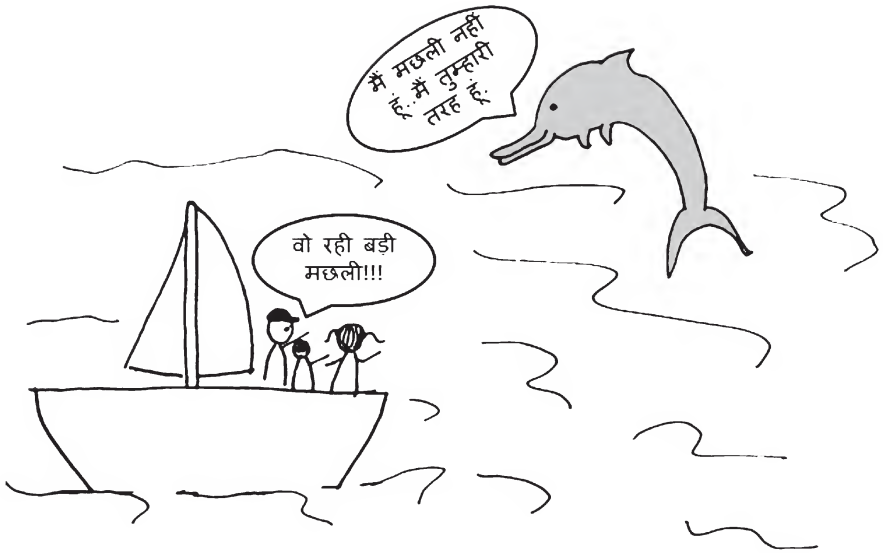
डोंबिवली (पूर्व)-421 201.

Email : treeimprints@gmail.com

स्नेहल : 9987552092

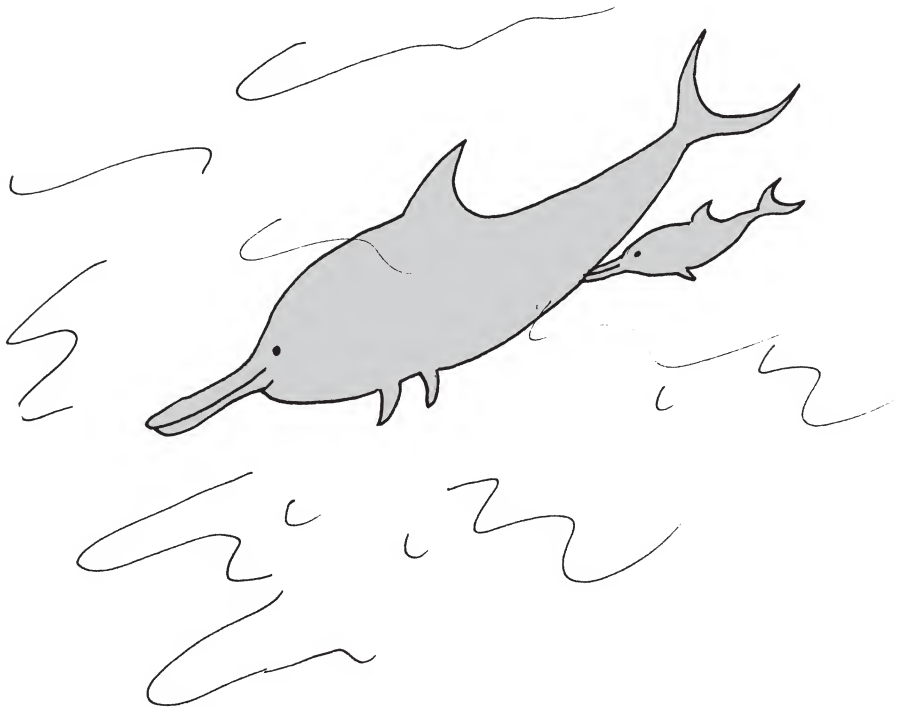
नील : 9820120607

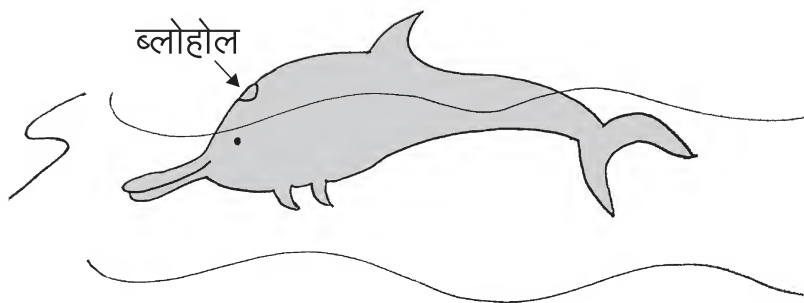
मूल्य : ₹20



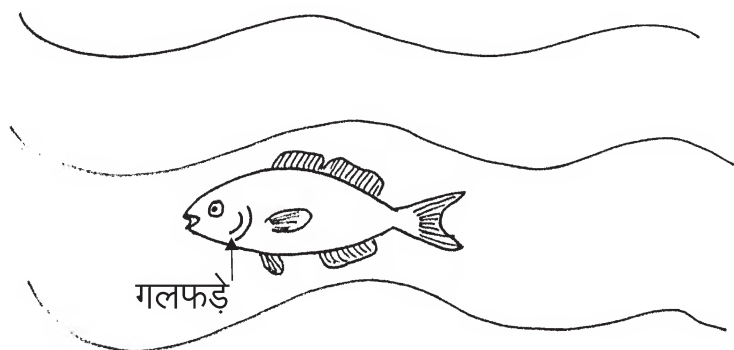
आज फिर कुछ लोगों ने मुझे मछली समझ लिया.  
मैं मछली जैसी दिखती हूँ पर मैं मछली नहीं हूँ.  
मैं हूँ 'गंगा डॉल्फिन' !

तुम इंसानों की तरह मैं भी एक स्तनधारी जीव हूं. नौ से ग्यारह महीने गर्भवती रहने के बाद मैं एक बच्चे को जन्म देती हूं. तुम्हारी तरह मेरा बच्चा भी दूध पीकर बड़ा होता है.

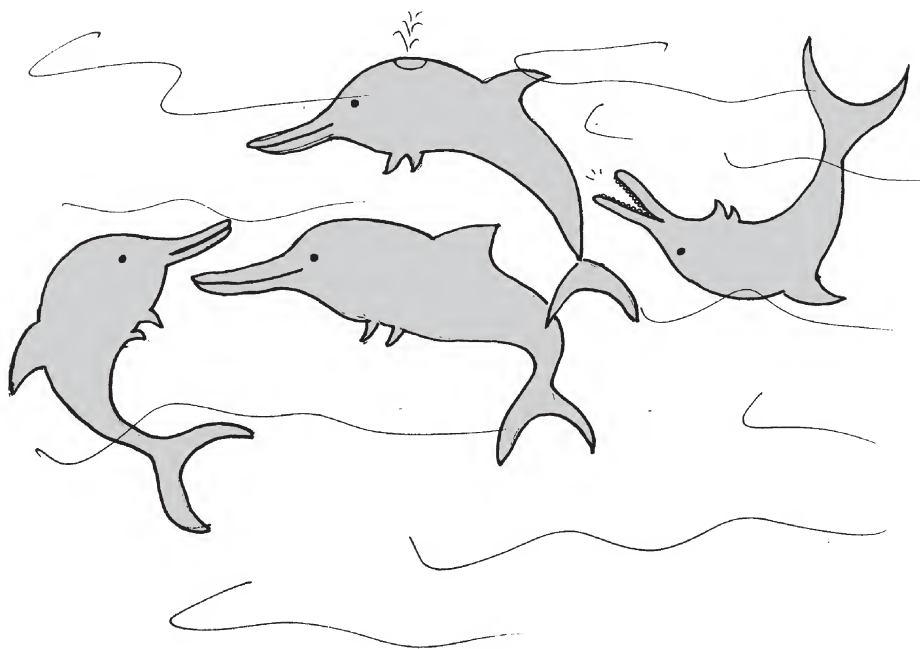


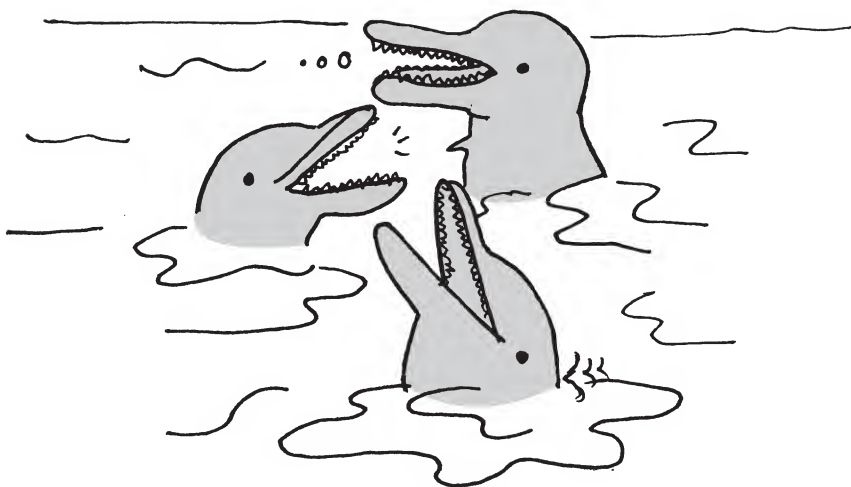


मेरे पास मछलियों जैसे गलफड़े नहीं हैं, इसलिए मैं पानी के अंदर सांस नहीं ले सकती हूं. सांस लेने के लिए हर बार मुझे पानी की सतह पर आना पड़ता है. मेरे सिर के ऊपर एक छेद होता है जिसे ब्लोहोल कहते हैं. इसे तुम अपनी नाक जैसा ही समझो. उसके सहारे मैं हवा अंदर लेती हूं. मुझे तुम्हारी तरह हवा से आक्सीजन की ज़रूरत पड़ती है.



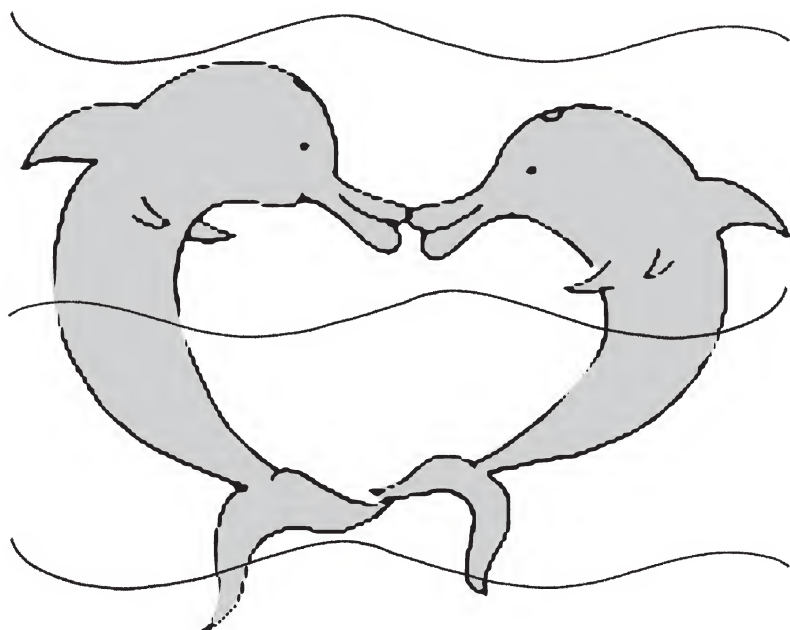
मैं एक सामाजिक जीव हूं. अकेले रहना मुझे बिल्कुल अच्छा नहीं लगता. मेरा भी अपना परिवार है, दोस्त हैं, जिनके साथ मैं गंगा नदी में रहती हूं. हम साथ में खाना ढूंढते हैं, घूमते हैं और खेलते भी हैं.





परिवार व दोस्तों से बातें करना मुझे बेहद पसंद है. मगर हम शब्दों के जरिए नहीं बल्कि अलग-अलग तरह की सीटियां बजाकर, दांतों से आवाज निकालकर, बुलबुले बनाकर और शरीर को अलग-अलग तरह से हिलाकर बातें करते हैं.

मुझे आनंद भी होता है और दुःख भी. प्रेम, डर,  
गुस्सा, चिंता आदि भावनाएं मुझे भी महसूस होती हैं.



देखा, कितनी सारी समानताएं हैं मुझमें और तुम में!



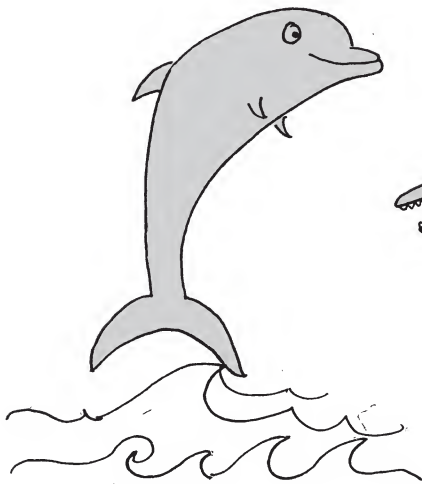


इनमें से ज्यादातर समुद्र के नमकीन पानी में रहती हैं.

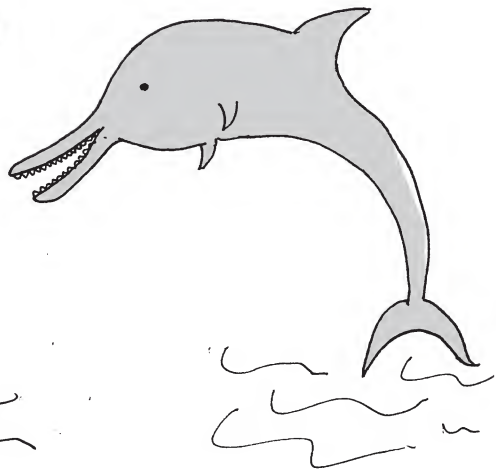
लेकिन हमारी चार प्रजातियां ऐसी हैं जो नदियों में यानी मीठे पानी में रहती हैं. मैं भी उनमें से एक हूं.



मेरी बनावट समुद्र में रहने वाली डॉल्फिन से कुछ अलग होती है.



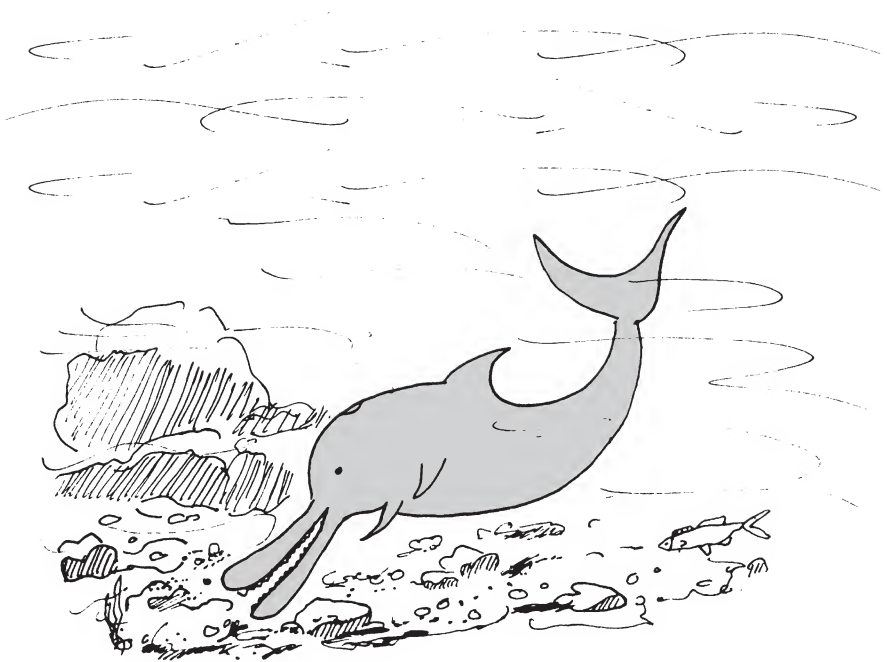
समुद्री डॉल्फिन



नदी की डॉल्फिन

क्या तुम बता सकते हो  
समुद्री डॉल्फिन और मुझमें  
क्या अंतर है ?

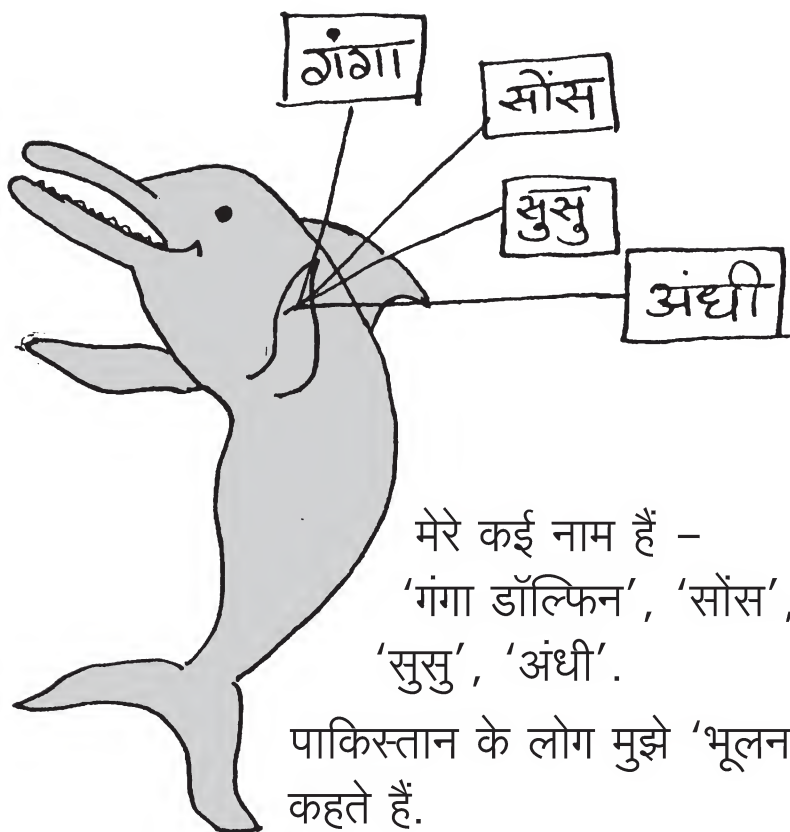
देखो मेरा मुंह समुद्री डॉल्फिन से काफी लंबा और नुकीला है. इसके सहारे मैं नदी की तलहटी की मिट्टी में छिपे शिकार को आसानी से निकाल लेती हूं. मेरे दांत छोटे-छोटे हैं इसलिए अक्सर मैं अपना शिकार चबाए बिना निगलना पसंद करती हूं. छोटी मछलियां मेरा पसंदीदा भोजन हैं.



भारत में मैं गंगा, गंगा की सहायक नदियों एवं ब्रह्मपुत्र में रहती हूँ. जरा देखो, तुम मुझसे किस-किस राज्य में मिल सकते हो ? और बताओ कौनसा राज्य कहाँ है ?



और एक बात... भारत के अलावा मैं पाकिस्तान, बांग्लादेश, भूटान और नेपाल में भी रहती हूँ.



हर एक नाम का अपना मतलब हैं. वह तुम बाद में जरूर खोजना.



मुझे अंधी डॉल्फिन इसलिए कहते हैं क्योंकि मैं लगभग अंधी हूं! मेरी आंखें छोटे छेद जैसी होती हैं जिनमें लेंस नहीं होता. इनसे मैं केवल अंधेरे और उजाले में फर्क कर सकती हूं.

ऐसा इसलिए है क्योंकि गंगा नदी का पानी धुंधला है जिसमें आंखें ज्यादा काम नहीं आतीं. लाखों सालों से गंगा में ऐसे ही रहते हुए मेरी आंखें कमजोर होती गईं.

आँखे तो काम की हैं  
नहीं, फिर मैं  
देखती कैसे हूँ?

ध्वनि यानी आवाज

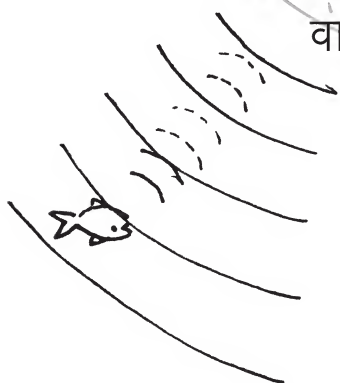
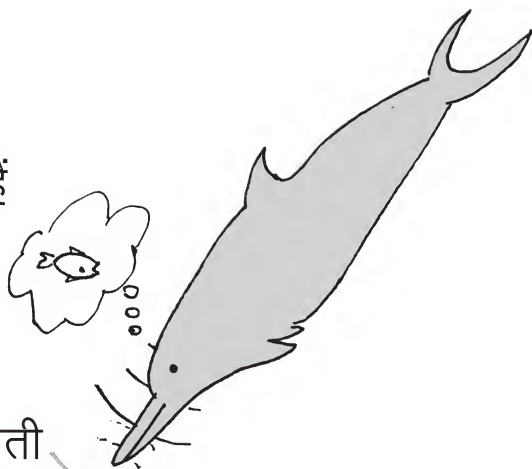
के जरिए! चलो बताती

हूँ कैसे - शिकार पकड़ने

के लिए या आस-पास की चीजों के बारे में जानने के  
लिए मैं अपने सिर से आवाज निकालती हूँ. यह  
आवाज किसी जीव या वस्तु से टकराकर मेरे पास

वापस आती है और मुझे एकदम  
सटीक तरह से पता चल जाता  
है कि मेरे आस-पास क्या है!

चमगादड़ भी रात में कुछ-कुछ  
ऐसे ही काम करते हैं.





पूरी दुनिया में मीठे पानी में  
रहने वाली हम चार  
प्रजातियां थीं. पर अब  
हम तीन ही बची हैं. एक



दक्षिण अमरिका की  
अमेजन नदी में रहने वाली

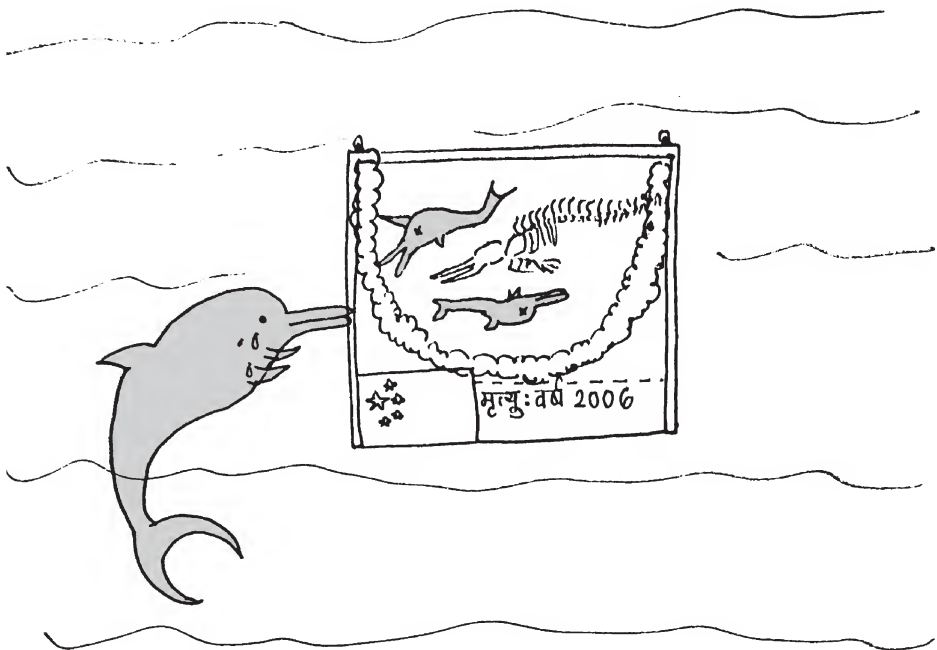
गुलाबी रंग की

‘बोटो डॉल्फिन’,



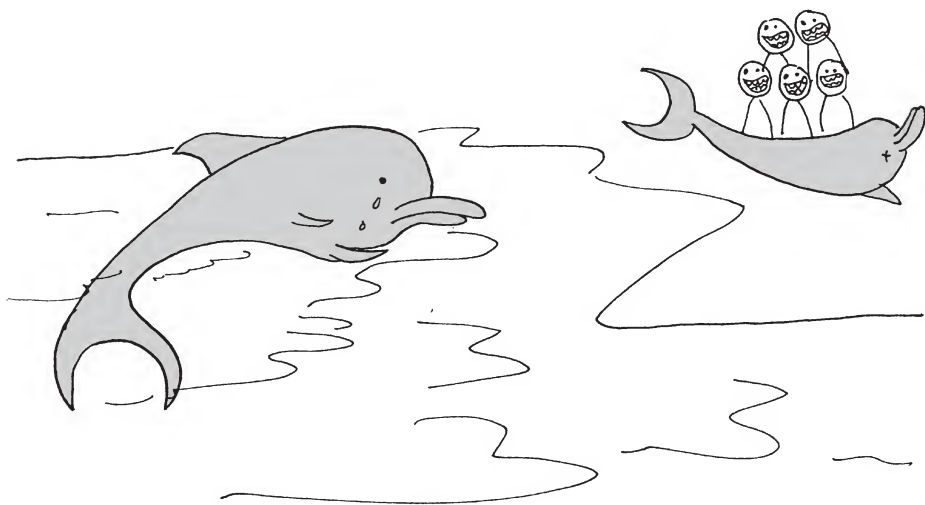
दूसरी दक्षिण अमरिका के  
तटीय इलाके की ‘ला  
प्लाटा डॉल्फिन’, और  
तीसरी मैं ‘गंगा डॉल्फिन’ !

हमारी चौथी रिश्तेदार 'बैजी डॉल्फिन' चीन की यांगत्जे नदी में रहती थी. मगर 2006 में बैजी का पूरा परिवार खत्म (विलुप्त) हो गया! आज यांगत्जे नदी में एक भी बैजी डॉल्फिन नहीं बची है.



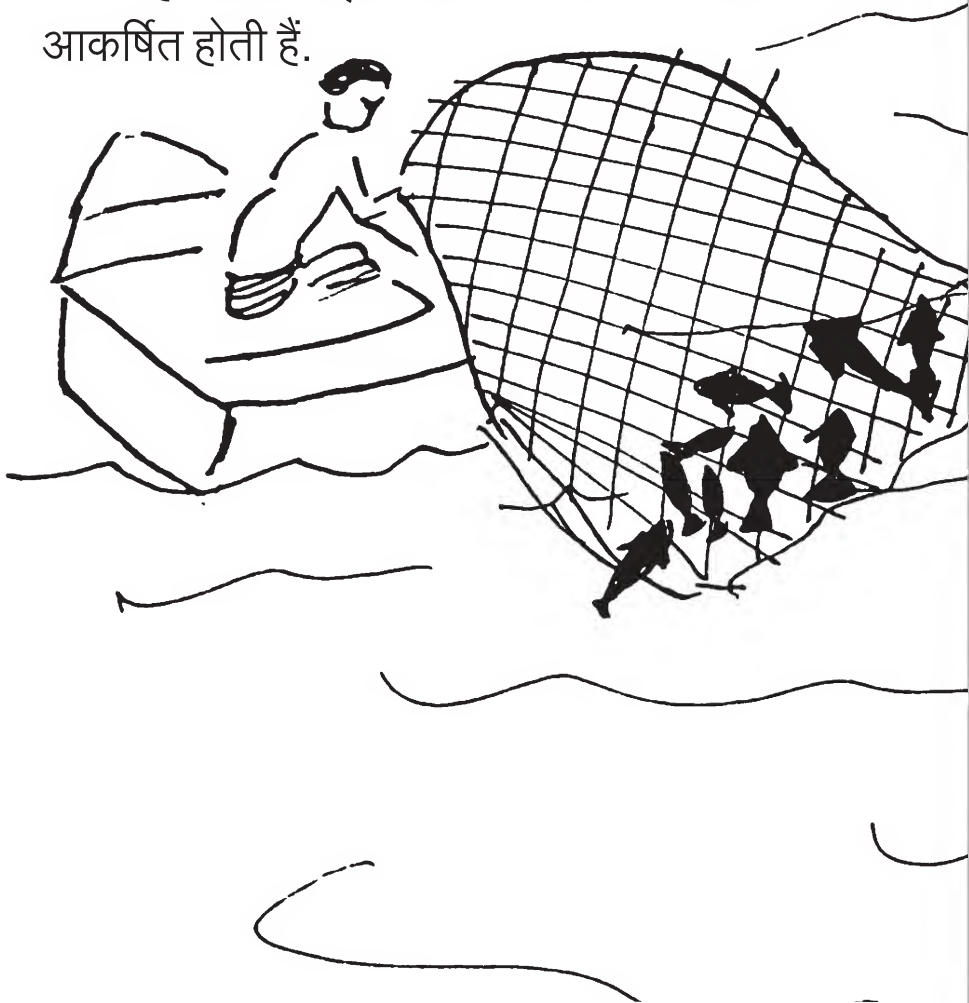
हम सभी को भी यह डर है कि बैजी की तरह कहीं हम भी विलुप्त न हो जाएं...

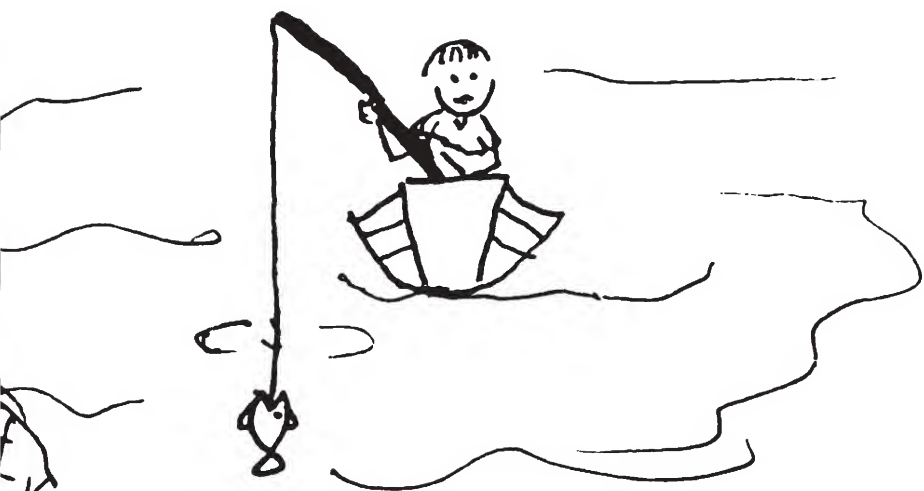
तुम इंसानों के कारण नदियों में रहने वाली हम सभी डॉल्फिन आज जिन्दा रहने के लिए संघर्ष कर रही हैं. हमारे परिवार के बहुत सारे सदस्य मर रहे हैं और हमारी संख्या तेजी से घट रही है.



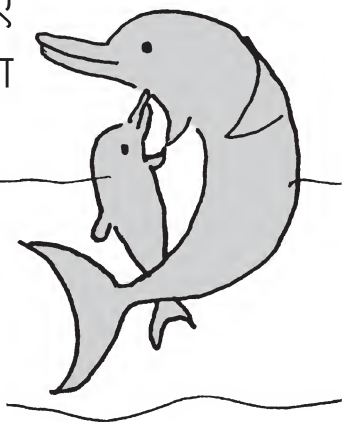
वर्ष 1982 में भारत में हम गंगा डॉल्फिन की संख्या लगभग 5000 थी किन्तु आज हमारी संख्या केवल 2000 रह गई है.

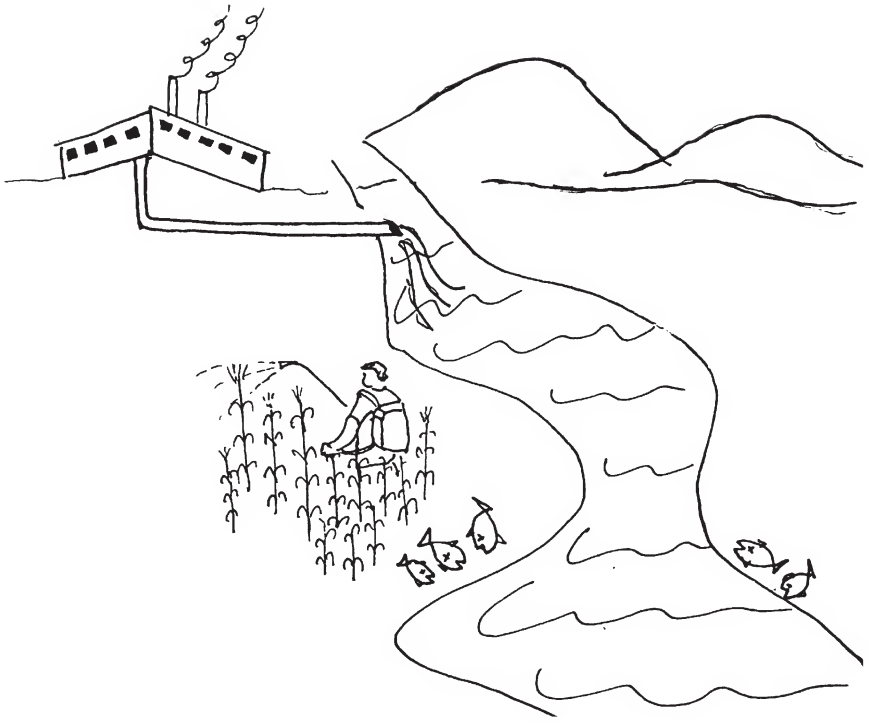
कुछ लोग मेरा मांस खाते हैं. बहुत से मछुवारे मुझे मारकर मेरी चर्बी से तेल निकालते हैं. इस तेल को मछली पकड़ने का चारा बनाने में इस्तेमाल किया जाता है क्योंकि इस तेल की गंध से मछलियां आकर्षित होती हैं.





ज्यादा मछलियां पकड़ने के लिए कुछ मछुआरे मच्छरदानी का इस्तेमाल भी कर रहे हैं। इनमें मछलियों के छोटे-छोटे बच्चे फंसकर मर जाते हैं। इससे गंगा में मछलियों की संख्या बहुत कम हो रही है और मुझे भोजन आसानी से नहीं मिल पा रहा है। भोजन नहीं मिलेगा तो मैं जिन्दा कैसे रहूंगी ?





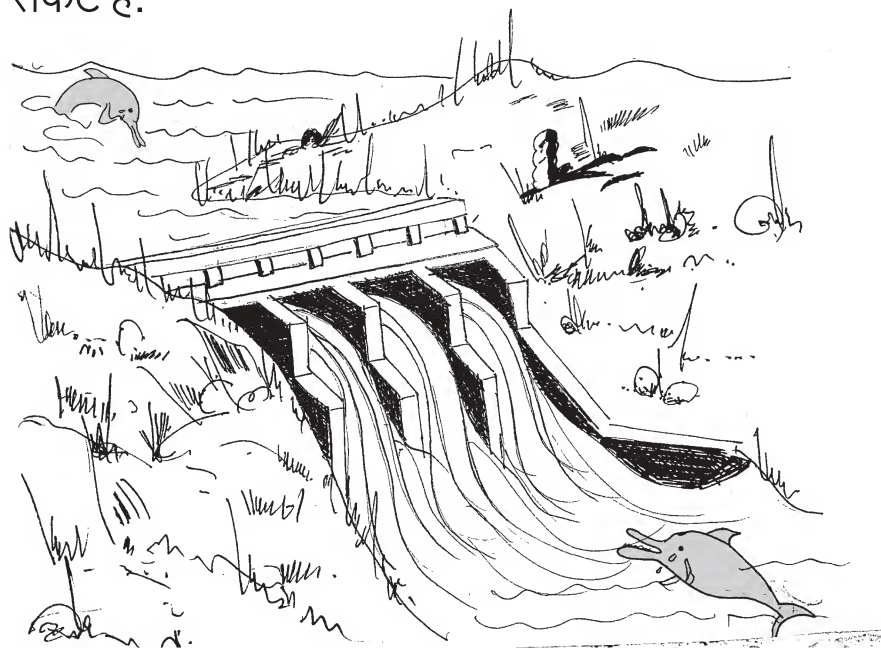
तुम इंसान अपने घरों, खेतों और कारखानों से हर दिन करोड़ों लीटर रासायनिक प्रदूषण हमारे घर गंगा में डालते हो. इस जहरीले प्रदूषण से गंगा में रहने वाले कई जीव मर रहे हैं. मेरे कुछ दोस्तों की मौत भी इस प्रदूषण की वजह से हुई.

तुम्हारे कई छोटे-बड़े जहाज गंगा में चलते हैं जिनसे बहुत शोर होता है. इस शोर से तो मैं बहुत घबरा जाती हूं. मुझे ठीक से सुनाई भी नहीं देता. कई बार तो इन जहाजों के नीचे घूमने वाले बड़े-बड़े पंखों से टकराने से मेरे दोस्त कटकर मर गए हैं!



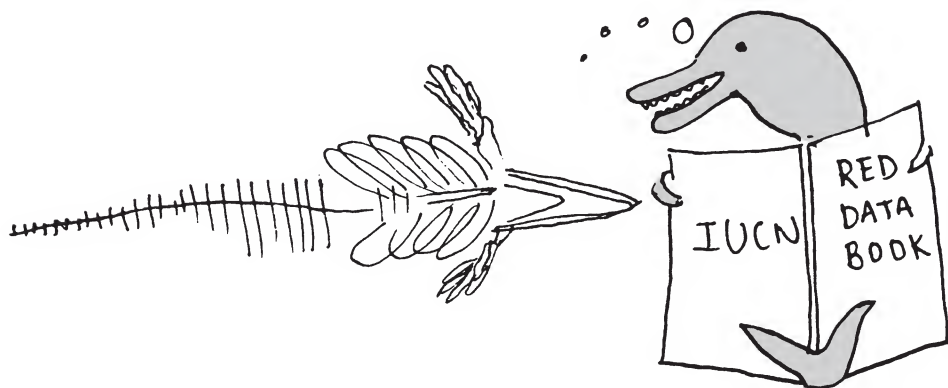
तुमने गंगा पर बहुत सारे बांध और बराजों का निर्माण कर दिया है जिससे गंगा कई भागों में बंट गई है और उसमें बहने वाला पानी भी बहुत कम हो गया है. गर्मी में तो नदी में बहुत ही कम पानी रह जाता है. अलग-अलग जगह बांध और बराज बनाने से मेरे परिवार के सदस्य एक दूसरे से अलग हो गए हैं क्योंकि हम इन्हें पार नहीं कर सकते हैं.

अब और क्या-क्या बताऊं तुम्हें! हम पर संकट ही संकट हैं.





जानते हो, 1996 में गंगा डॉल्फिन का नाम रेड 'डाटा बुक' की 'संकटग्रस्त' श्रेणी में रख दिया गया. यह सुनकर तो मैं बहुत घबरा गयी.



'संकटग्रस्त' श्रेणी यह सूचित करती है कि – हमारी पूरी प्रजाति खतरे में हैं और बहुत जल्द ही हमारी प्रजाति के सारे सदस्य पूरी तरह से खत्म हो सकते हैं.

हम सब लुप्त नहीं होना चाहते...

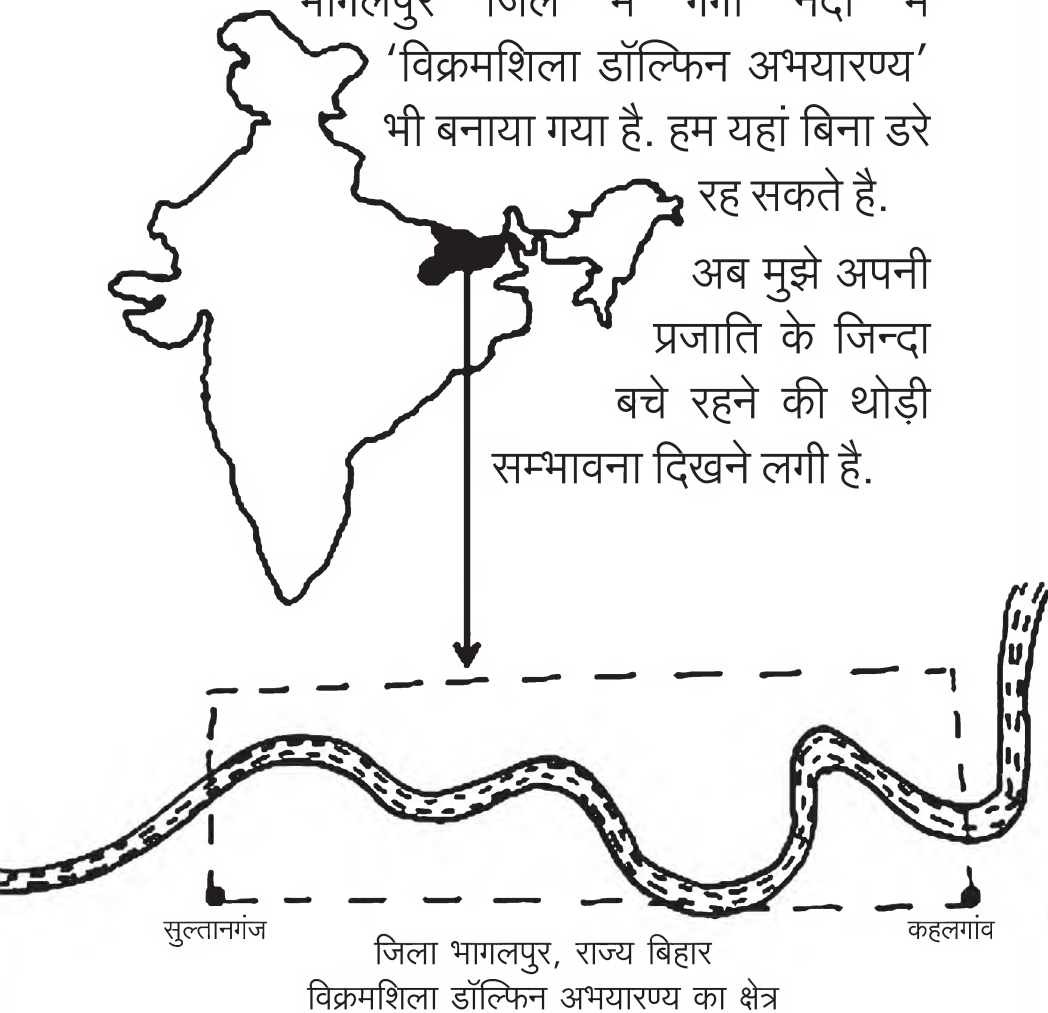
क्या तुम हमें बचाओगे?  
क्या तुम हमें बचा पाओगे?



5 अक्टूबर 2009 को हम  
गंगा डॉल्फिन को भारत  
का 'राष्ट्रीय जल प्राणी'  
घोषित किया गया.  
इस बात से मुझे  
थोड़ा सुकून मिला.  
कम-से-कम हमारे बारे में  
सोच-विचार तो किया जा रहा था.

मुझे बचाने की कोशिशें जारी हैं. गंगा में प्रदूषण कम करने का प्रयास किया जा रहा है. हमारा शिकार करने पर कानूनी रोक लगा दी गई है. बिहार के भागलपुर जिले में गंगा नदी में 'विक्रमशिला डॉल्फिन अभयारण्य' भी बनाया गया है. हम यहां बिना डरे रह सकते हैं.

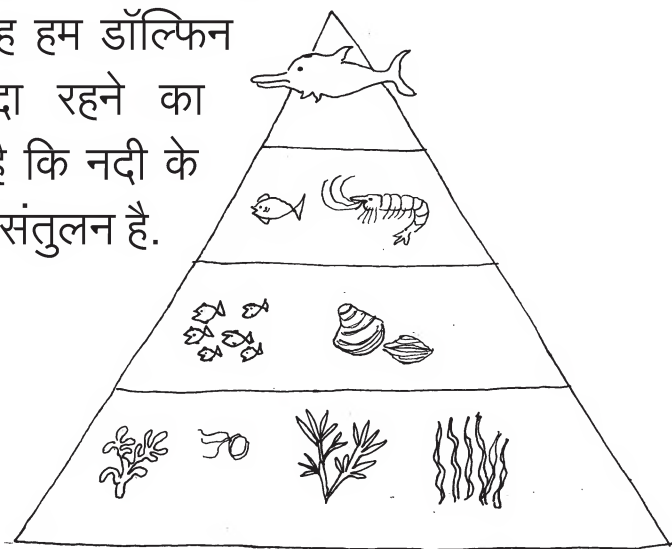
अब मुझे अपनी प्रजाति के जिन्दा बचे रहने की थोड़ी सम्भावना दिखने लगी है.



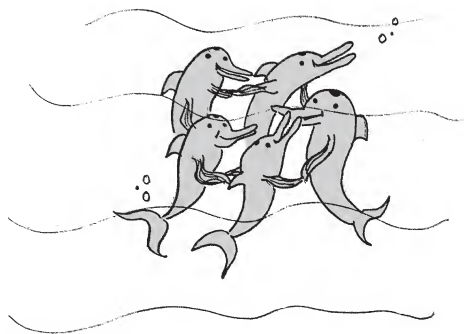
शायद तुम इंसानों की समझ में अब आ गया है कि हम डॉल्फिन केवल नदी में रहने वाले जीव नहीं हैं बल्कि उस नदी को बचाने वाले जीव भी हैं. ऐसा इसलिए क्योंकि हम नदी की खाद्य शृंखला के शिखर पर हैं और दूसरे जीवों की संख्या को नियंत्रण में रखते हैं.

जैसे बाघ जंगल की खाद्य शृंखला के शिखर पर होते हैं और बाघों की अच्छी आबादी होने का मतलब है कि जंगल में संतुलन है,

उसी तरह हम डॉल्फिन के जिन्दा रहने का मतलब है कि नदी के जीवन में संतुलन है.



खैर, देर से सही पर  
हमें बचाने की कोशिश  
शुरू तो हुई है. हमें  
बचाने में तुम भी अपना  
योगदान दे सकते हो!  
कैसे? अरे, कम-से-



कम तुम अपने दोस्तों को मेरी कहानी तो सुना सकते  
हो ना? तुम्हारा हर प्रयास एक-न-एक दिन मुझ

तक जरूर पहुंचेगा जिसकी

वजह से मैं अपने परिवार के

साथ हमेशा गंगा की गोद में

खेलते हुए तुम्हें याद

करूंगी...!



“डॉल्फिन बचाओ - गंगा बचाओ!”

क्या तुम गंगा डॉल्फिन के लिए कुछ संदेश लिखना चाहोगे ?

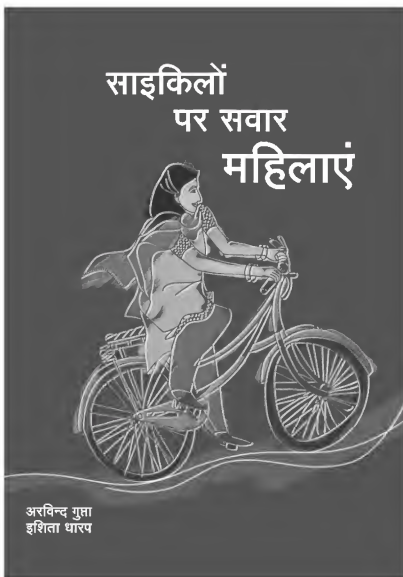
नाम : \_\_\_\_\_  
जन्म दिनांक : \_\_\_\_\_  
गांव : \_\_\_\_\_  
राज्य : \_\_\_\_\_

\_\_\_\_\_

संदेश लिखने के बाद तुम  
इस पेज का फोटो  
स्वीचकर 9821194054  
नंबर पर WhatsApp  
कर सकते हो.

दोस्त, एक दिन मुझे मिलने जरूर आना. मेरा पता  
तो तुम अब जानते ही हो. मैं तुम्हारी राह देखूंगी.  
- तुम्हारी  
गंगा डॉल्फिन





## साइकिलों पर सवार महिलाएं

लेखन : अरविंद गुप्ता

चित्र : इशिता धारप

1991 में पुडुकोट्टई, तमिलनाडू में एक विलक्षण प्रयोग हुआ. राष्ट्रीय साक्षरता मिशन के अंतर्गत एक लाख से अधिक महिलाओं ने पढ़ने-लिखने के साथ साइकिल चलाना भी सिखा. इस प्रकार का और इस पैमाने का आंदोलन दुनिया में पहले कही नहीं हुआ. इस कहानी को पहली बार एक चित्र कथा (ग्राफिक नॉवेल) के रूप में पेश किया जा रहा है.



## खुशी-खुशी विज्ञान

लेखन : अशोक रुपनेर

चित्र : रेश्मा बर्वे

विज्ञान की 40 से अधिक मजेदार गतिविधियों को इस पुस्तक में क्रमबद्ध चित्रोंद्वारा दर्शाया गया है. इन प्रयोगों में अक्सर फेंकी हुई चीजें, प्लास्टिक की बोतल, स्ट्रॉ, कागज के कप आदि इस्तेमाल किये गये हैं. हाँ कुछ चुंबक और तांबे के तार जरूर खरीदने होंगे. लेकिन बच्चे और बड़े भी इन प्रयोगोंका आनंद ले सकते हैं.

गंगा को कई लोग माँ मानते हैं.  
गंगा और उसके साथ की अन्य नदियों के सहारे करोड़ों लोग  
जीवन जी रहे हैं. पर क्या वे सिर्फ इंसानों के लिए हैं?

हम इंसान प्रकृति को केवल अपने उपयोग की नजर से देखते हैं.  
नदियों को भी हम अपनी जरूरत के अनुसार इस्तेमाल करते हैं—  
जीवित रहने के लिए हम उनका पानी लेते हैं और बदले में  
अपनी गंदगी उनमें डाल देते हैं. मगर नदियां तो अनगिनत  
छोटे-बड़े जीवों को भी जीवन देती हैं. वे जीव भी उनपर उतने  
ही निर्भर हैं जितने हम इंसान.

गंगा भी अपने अंदर कई जीवों को आश्रय देती है.  
इन्हीं में से एक है अनोखी गंगा डॉल्फिन.  
आओ जानें उसकी कहानी, उसी की जुबानी!

प्रकाशक  
ट्री इम्प्रिंट्स  
और  
अच्छा बच्चा कम्युनिकेशन